आरण्यकांड ३

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

उमा राम गुन गूढ पंडित मुनि पावहि बिरति॥ पावहि मोह विमूढ जे हरि बिमुख न धर्म रति ६।

आरण्य १ ॥ ६०॥ श्रीमते रामानुजाय नमः॥ श्रीजानकीवल्लभो विजयते॥ श्लोक॥ मूलं धर्मतरोर्विवेकजलधेः पूर्णेंदुमानंददं वैराग्यांबुजभास्करं रघुवरं त्वेंज्ञा
नयाघ्वापहं॥ मोहांभोधिपुगपाटनविधौ स्वासंभवं संकरं वंदे ब्रह्मकुलं कलंकसमनं श्रीरामभूपप्रियं॥१॥ सारद्रानंदपयोदसौभगतनुं पीतांवरं सु
दरं पाणौ वाणसरासनं कटिलसत्तूनीरभारं वरं॥ राजीवायतलोचनं धृतजटाजूटेन संसोभितं सीतालक्ष्मणसंयुतं पथिगतं रामाभिरामं भजे॥
कुलपापा छंद॥ चौपाई॥ पुरजन भरत प्रीति मैं गाई॥ मति अनुरूप अनूप सोहाई॥ अव प्रभु चरित सुनहु अति पावन॥ करत जो वन सुर नर मु
नि भावन॥ एक वार चुनि कुसुम सोहाए॥ निज कर भूषण रुचिर वनाए॥ सीतहि प्रभु पहिराए सादर॥ वैठे फटिक सिला पर भाधर॥ सुरपति सुत धरि
वायस वेषा॥ सठ चाहत रघुपति वल देषा॥ जिमि पिपीलिका सागर चह थाहा॥ महा मंदमति पावन चाहा॥ सीता चरण चोंच हति भागा॥ मूढ मंदमति कार
ण कागा॥ चला रुधिर रघुनायक जाना॥ सींक धनुष सायक संधाना॥ दो॥ अति कृपाल रघुनायक सदा दीन पर नेह॥ ता सन आइ कीन्ह छ राम १
ल मूरख औगुन गेह॥ चौ॥ प्रेरित मंत्र ब्रह्मसर धावा॥ चला भागि वायस भय पावा॥ धरि निज रूप गए पितु पाही॥ राम विमुख राषा तेहि नाही॥ भा नि
रासि उपजी मन त्रासा॥ यथा चक्र भए रिषि दुर्वासा॥ ब्रह्मधाम सिवपुर सव लोका॥ फिरा श्रमित व्याकुल भै सोका॥ काहु न वैठु कहा पुनि वोही॥ रा
षि को सकै राम कह द्रोही॥ मातु मृत्यु पितु समन समाना॥ सुधा होइ विषि सुनु हरिजाना॥ मित्र करै सत रिपु कै करनी॥ ता कहुं विवुधनदी वैतरनी॥ स
विनु अपराध प्रभु द्द तेन काह्नु॥ अवसर परे उ ग्रसैस सिराह्नु॥ जव प्रभु भली द्दसी कधनु वाना॥ को
धजानि भाग्यन न समाना

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

दोहा॥ जिमिजिमि भाजत शक्रसुत व्याकुल अति दुषदीन॥ तिमितिमि धावत रामसर पाछै परम प्रवीन॥ वचद्विजरगवसत्रससैषजे दुरदिने कि प्रभु प्रभुताई॥ भाजे जातु वहु विधि समुझाई॥
सा॥ रघुपति सरकुटिव च वज्र देसा॥
व जग ताहि अनलहु तैं ताता॥ जो रघुवीर विमुख सुनु भ्राता॥ नारद देषा विकल जयंता॥ लागि दया कोमल चित संता॥ पठवा तुरित राम पहं ता
ही॥ कहे सुपुकारि प्रनत हित पाही॥ आतुर सभै गहेसि पद जाई॥ त्राहि त्राहि दयाल रघुराई॥ अतुलित वल अतुलित प्रभुताई॥ मैं मतिमंद जानु नहि
पाई॥ निज कृत कर्म जनित फल पाएउ॥ अव प्रभु पाहि सरन तकि आएऊ॥ सुनि कृपाल अति आरत वानी॥ एक नयन करि तजा भवानी॥ सोरठा
कीन्ह मोह वस द्रोह जद्यपि एकर वध उचित॥ प्रभु छाडे करि छोह को कृपाल रघुवीर सम॥ २॥ चौ॥ रघुपति चित्रकूट वसि नाना॥ चरित किए
अति सुधा समाना॥ वहुरि राम अस मन अनुमाना॥ होइहि भीर सव न अस जाना॥ सकल मुनिन सन विदा कराई॥ सीता सहित चले दोउ भाई॥
अत्रि आश्रम जव प्रभु गएउ॥ सुनत महामुनि हरषित भएउ॥ पुलकि गात अत्रि उठि धाए॥ देषि राम आतुर चलि आए॥ करत दंडवत मुनि उ
र लाए॥ प्रेम वारि दोउ जने नअन्हाए॥ देषि राम छवि नयन जुडाने॥ सादर निज आश्रम तव आने॥ करि पूजा कहि वचन सोहाए॥ दिए मूल फल
प्रभु मन भाए॥ सो॥ प्रभु आसन आसीन भरि लोचन सोभा निरषि॥ मुनिवर परम प्रवीन जोरि पानि अस्तुति करत॥ तोमरछंद॥ अस्तोत्र॥ नमा
मि भक्त वत्सलं॥ कृपाल सील कोमलं॥ भजामि ते पदांबुजं॥ अकामिनां स्वधामदं॥ निःकाम स्याम सुंदरं॥ भवांबुनाथ मंदरं॥ प्रफुल्ल कंज लोचनं॥ मदादि
दोष मोचनं॥ प्रलंव वाहु विक्रमं॥ प्रभो प्रमेय वैभवं॥ निषंग चाप सायकं॥ धरे त्रिलोक नायकं॥ दिनेस वंस मंडनं॥ महेस चाप षंडनं॥ मुनिंद्र संत रंज
नं॥ सुरारि वृंद गंजनं॥ मनोज वैरि वंदितं॥ अजादि देव सेवितं॥ विशुद्ध वोध विग्रहं॥ समस्त दूषनापहं॥ नमामि इंदिरा पतिं॥ सुषाकरं सतां गतिं॥ भजे स

वु

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

गोसियसकललोकसुषदाता॥ ग्रुषिल्ले कोटिब्रह्मांड की माता॥ ते उपाइसु निवर मुनि भामिनी॥ सरवी भइ कृपा दिनि जि मिजे सिनी॥५
नरादरेन ते पदं॥ जनम जनम तव पद सुषकंदा॥ वढौ प्रेम चकोर जिमि चंदा॥ देषि राम मुनि विनय प्रनामा॥

अ॰यो॰ सक्तिसानुजं॥ सचीपती एयानुजं॥ त्वदंघ्रि मूलयेनरा॥ भजंति हीनमत्सरा॥ पतंति नोभवार्नवे॥ वितर्कवीचिसंकुलं॥ विविक्तवासिर्नसदा॥ भवंति मु विविधि
धर्म २ क्तिये मुदा॥ निरस्य इंद्रियादिकं॥ प्रयांति ते गतिं स्वकं॥ त्वमेकमद्भुतं प्रभुं॥ निरीहमीश्वरं विभुं॥ जगद्गुरुं च शाश्वतं॥ तुरीयमेककेवलं॥ भजामि भाव भाँति पा
बिचारि स वल्लभं॥ कुजोगिनां सुदुर्लभं॥ स्वभक्तकल्पपादपं॥ समं सुसेव्यमन्वहं॥ अनूपरूपभूपतिं॥ नतोहमुर्विजापतिं॥ प्रसीद मे नमामि ते॥ पदाब्जभक्ति एठ विश्रा
मुझि कुल दे हि मे॥ पठंति ये स्तवं इदं॥ व्रजंति नात्र संसयं॥ त्वदीयभक्तिसंयुतं॥ दो॥ विनती करि मुनि नाइ सिर कह कर जोरि बहोरि॥ चरन सरोरुह नाथ ज मा॥५॥
रहै॥ ति निकबहूं तजै मम मोरि॥४॥ चौ॥ अनसुइया के पद गहि सीता॥ मिली बहोरि सुसील बिनीता॥ रिषिपतनी मन सुष अधिकाई॥ आसिष देइ निक
सो निकि ट बैठाई॥ दिव्य बसन भूषन पहिराए॥ जे नित नूतन अमल सोहाए॥ कह रिषिबधू सरल मृदु बानी॥ नारिधर्म कछु ब्याज बषानी॥ मातु पिता भ्रा
ष्ट त्रिय स्रु ता हितकारी॥ मितप्रद सब सुनु राजकुमारी॥ अमित दानि भर्ता वैदेही॥ अधम सो नारि जो सेव न तेही॥ धीरज धर्म मित्र अरु नारी॥ आपद काल परि
ति अस कहै॥ षीअहि चारी॥ बृद्ध रोगवस जड़ धनहीना॥ अंध बधिर क्रोधी अति दीना॥ ऐसेहु पति करि किए अपमाना॥ नारि पाव जमपुर दुख नाना॥ एकै राम
॥१॰ धर्म एकै ब्रत नेमा॥ काय बचन मन पति पद प्रेमा॥ जग पतिब्रता चारि बिधि अहही॥ बेद पुरान संत सब कहही॥ उत्तम के अस बस मन माही॥ २
सपनेहु आन पुरुष जग नाही॥ मध्यम परपति देषै कैसे॥ भ्राता पिता पुत्र निज जैसे॥ बिनु अवसर भय ते रह जोइ॥ जानेहु अधम नारि जग सोइ॥
पतिबंचक परपति रति करई॥ रवरव नरक कलप शत परई॥ छन सुख लागि जन्म शत कोटी॥ दुख न समुझ तेहि सम को षोटी॥ बिनु श्रम नारि पर

उतम मध्यम मनी चलबु सकल कद हु सम जाई॥ आगे सुन क्ति ते भव तरहि सुनहु सी यचित लाई॥ दोहा ३॥
जादिनि निरषि दु षद रिपराई॥ जरु दु जा [illegible] दोहा॥ ऐसे बचन विचित्र सुहि दीए सीय कहु आनि॥
सनमाना प्रिय बचन कहि प्रीति न जाइ बषानि॥६

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat initiative

मगतिलहही॥ पति पतिब्रतधर्मछाडि छलगहही॥ पतिप्रतिकूल जन्मजहंजाई॥ विधवाहोइपाइतरुणाई॥ सोरठा॥ सहजअपावनिनारिपतिसेवत
सुभगतिलहे॥ जसगावत श्रुतिचारि अजहूंतुलसिकाहरिहिप्रिया॥ सो॥ सुनुसीतातवनामसुमिरिनारिपतिब्रतकरहि॥ तोहिप्रानप्रियरामकहेउंक
यासंसारहित॥ ६॥ चौ॥ सुनिजानकीपरमसुखपावा॥ सादरतासुचरनसिरनावा॥ तबमुनिसनकहकृपानिधाना॥ आयसुहोइजाउंवन
आना॥ संततमोपैकृपाकरेहू॥ सेवकजानितजेहुजनिनेहू॥ धर्मधुरंधरप्रभुकैवानी॥ सुनिसप्रेमबोलेमुनिग्यानी॥ जासुकृपाअ
जशिवसनकादी॥ चहतसकलपरमारथवादी॥ तेतुमरामअकामपियारे॥ दीनबंधुमृदुवचनउचारे॥ अबजानीमैश्रीचतुराई॥ भ
जियतुमहिसबदेवविहाइ॥ जेहिसमानअतिसैनहिकोइ॥ ताकरसीलकसनअसहोइ॥ केहिविधिकहोजाहुवनस्वामी॥ कहहुना
थतुमअंतरजामी॥ असकहिप्रभुविलोकिमुनिधीरा॥ लोचनजलबहपुलकसरीरा॥ छं॥ तनपुलकनिर्भरप्रेमपूरणनयनमुखपंकजदिए॥
मनज्ञानगुनगोतीतप्रभुमैदीखजपतपकाकिए॥ जपजोगधर्मसमूहतेनरभक्तिअनुपमपावही॥ रघुवीरचरितपुनीतनिसिदिनदासतुलसीगावही॥
दो॥ मुनिबहुकिअस्तुतिकीन्हप्रभुदीन्हसुभगवरदान॥ सुमनवृष्टिनभसुरकरैजैजैकृपानिधान॥ ७॥ चौ॥ मुनिपदकमलनाइकरिसीसा॥ चलेवनहिसुर
नरमुनिईसा॥ आगेरामअनुजपुनिपाछे॥ मुनिवरवेषवनेअतिकाछे॥ उभयवीचसियसोहतकैसे॥ ब्रह्मजीवविचमायाजैसे॥ सरितावनगिरिऔघटघा
टा॥ पतिपहिचानिदेहिवरवाटा॥ जहंजहंजाहिदेवरघुराया॥ करहिमेघनभतहंतहंछाया॥ आश्रमविपुलदिषमगमाही॥ देवसदनतेहिपटतरनाही॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

आरण्य ३ दिव्यविटपफलचहुदिसिफूलहि ॥ देषतसुनतसकलमुनिभुलहि ॥ खगअनेकअनवनवहुरंगा ॥ कूजहिकलरवकरहिविहंगा ॥ दो ॥ निज०
निजआश्रमवेदिकातेहिपरतुलसीविराज ॥ अनुजजानकीसहिततहंराजतभोरघुराज ॥ ८ ॥ चौ ॥ तेहिदिनप्रभुतहंकीन्हनिवासा ॥ सकलमुनिन्ह
मिलिकीन्हसुपासा ॥ प्रातकालउठिरघुकुलदेवा ॥ मज्जनकीन्हपारषीसेवा ॥ वहुरिमुनिन्हसनआयसुपाइ ॥ सीतासहितचलेदोउभाई ॥ मिलाअसुर
विराधमगजाता ॥ गरजतघोरकठोररिसाता ॥ गहेंपानित्रीसूलअतिघोरा ॥ केहरिमारिवृधेसिचहुंवोरा ॥ तुरतहिसोसीतहिलेगेऊ ॥ रामहृदैअतिवि०
स्मयभयऊ ॥ समुझिहृदयकैकेइकैकरनी ॥ कहाअनुजसनवहुविधिवरनी ॥ वहुरिलषणरघुवरहिप्रवोधा ॥ पाचवानछांडेकरिक्रोधा ॥ छं ॥
भैक्रोधलषनसंधानिधनुतवमारितेहिव्याकुलकिए ॥ पुनिउठेउनिसिचरराषिसीतहिमूललैछांडतभए ॥ जनुकालदंडकरालधावतविकलस
दसुरगनभयो ॥ धनुतानिश्रीरघुवंसमनिपुनिकाटितेहिरजसमकियो ॥ दो ॥ वहुरिएकसरमारापराधरनिधुनिमाथ ॥ उठिवहोरिगरजाचलेउ सो
जहांरघुनाथ ॥ ९ ॥ चौ ॥ तासुतेजवलमरुतसमाना ॥ टूटदहितरुउजाहिपषाना ॥ उरगसमानजोरिसरसाता ॥ आवतहीरघुनाथनिपाता ॥ तुरित० राम
हिरुचिररूपतेहिपावा ॥ देषिदुषितनिजधामपठावा ॥ सीताआनिचरनलपटानी ॥ अनुजसहिततवचलेभवानी ॥ इहासुरेससकलमुनिसंगा ॥ गएत ३
हांजहांमुनिसरभंगा ॥ सुनासीरप्रभुतेहिंछनदेषा ॥ तेजनिधानसुभ्रअतिवेषा ॥ तुरगचारिरथदेषियकैसे ॥ वेगवंतपन्नगअरिजैसे ॥ देवन्हसहित०
विराजसुराजा ॥ सेतछत्रसिरऊपरछाजा ॥ उपमासरदइंदुसमतुलही ॥ नषतमनहुमुकुतागनफुलही ॥ कनकदंडगहिचरनडोलावहि ॥ तनुरविकिर

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

निरोषनि यरावहि॥ एहि विधि प्रभु सुरेस कह देषा॥ भए मगन सुख पाइ विशेषा॥ वहुरि सुरेस निरषि श्रीरामा॥ कीन्ह प्रनाम गए उ निज धामा॥ पुनि
आए जहं मुनि सरभंगा॥ सुंदर अनुज जानकी संगा॥ दो॥ देषि राम मुख पंकज मुनिवर लोचन भृंग॥ सादर पान करत अति धन्य जन्म सरभं
ग॥१०॥ चौ॥ कह मुनि सुनु रघुवीर कृपाला॥ संकर मानस राज मराला॥ जात रहेउं विरंचि के धामा॥ सुनेउं श्रवन वन आवत रामा॥ चितवत पं
थ रहेउं दिन राती॥ अव प्रभु देषि जुडानी छाती॥ नाथ सकल साधन मैं हीना॥ कीन्हि कृपा जानि जन दीना॥ सो कछु देव न मोर निहोरा॥ निज पन रा
षेहु जन मन चोरा॥ तव लगि रहहु दीन हित लागी॥ जव लगि मिलौ तुमहि तनु त्यागी॥ जोग यज्ञ तप व्रत नहि कीन्हा॥ प्रभु कहं देइ भक्ति वर लीन्हा॥ एहि
विधि सर रचि मुनि सरभंगा॥ वैठा हृदय छाडि सव संगा॥ दो॥ अनुज जानकि सहित प्रभु नील जलद तनु स्याम॥ मम हिय वसहु निरंतर सगुण रूप श्रीराम
॥११॥ चौ॥ अस कहि जोग अगिनि तनु जारा॥ राम कृपा वैकुंठ सिधारा॥ ताते मुनि हरि लीन न भएउ॥ प्रथमहि भेद भगति वर लैऊ॥ रिषि निकाइ मुनिवर ग
ति देषी॥ सुखी भए निज हृदय विशेषी॥ अस्तुति करहि देव मुनि वृंदा॥ जयति प्रणत हित करुणा कंदा॥ पुनि रघुनाथ चले वन आगे॥ मुनिवर वृंद विपुल
संग लागे॥ अस्थि समूह देषि रघुराया॥ पूछा मुनिन्ह लागि अति दाया॥ जानतहूं अस पूछिय स्वामी॥ समदरसि तुम अंतरजामी॥ निसिचर निकर
सकल मुनि षाए॥ सुनि रघुवीर नयन जल छाए॥ दो॥ निसिचर हीन करें मही॥ भुज उठाइ पन कीन्ह॥ सकल मुनिन्ह के आश्रमनि जाइ जाइ सुख दी
न्ह॥१२॥ चौ॥ मुनि अगस्ति कर सिष्य सुजाना॥ नाम सुतीछन रति भगवाना॥ मन क्रम वचन राम कर सेवक॥ सपनेहुं आन भरोस न देवक॥ प्रभु आ

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

आरण्य ४ गमनश्रवनसुनीपावा ॥ करतमनोरथसनमुखधावा ॥ हैविधिदीनवंधरघुराया ॥ मोसेसठपरकरिहहिदाया ॥ सहितअनुजमोहिरामगो
सांइ ॥ मिलिहहिनिजसेवककिनाई ॥ मोरेजियभरोसहदनाही ॥ भगतिनविरतिग्यानमनमाही ॥ नहिसतसंगजोगजपजागा ॥ नहिहदचरनकमल
अनुरागा ॥ एकवानिकरुणानिधानकी ॥ सोप्रियजाकेगतिनआनकी ॥ होइहिआजुसुफलममलोचन ॥ देषिवदनपंकजभैमोचन ॥ निर्भरप्रे
ममगनमुनिज्ञानी ॥ कहिनजाइसोइदशाभवानी ॥ दिसिअरुविदिसिपंथनहिसूझा ॥ कोमैकहाचलानहिवूझा ॥ कवहिकेपाछेफिरिफिरिजाई ॥
कवहुकेनृत्यकरैगुणगाई ॥ अविरलप्रेमभक्तिमुनिपाई ॥ प्रभुदेषैतरुवोटलुकाई ॥ अतिसैप्रीतिदेषिरघुवीरा ॥ प्रगटेहृदयहरणभवभीरा ॥ मुनि
मगमाहअचलहोइवैसा ॥ पुलकशरीरपनसफलजैसा ॥ तवरघुनाथनिकटचलिआए ॥ देषिदशानिजजनमनभाए ॥ मुनिहिरामवहुभांतिजगावा
जागनध्याननजनितसुषपावा ॥ भूपरूपतवरामदुरावा ॥ हृदयेचतुरभुजरूपदेषावा ॥ मुनिअकुलाइउठापुनिकैसें ॥ विकलहीनमनिफनिवरजैसे ॥ ८
आगेदेषिरामतनस्यामा ॥ सीताअनुजसहितसुखधामा ॥ परेउलकुटजिमिचरनन्हलागी ॥ प्रेममगनमुनिवरवडभागी ॥ भुजविसालगहिलिएउ राम ४
ठाई ॥ परमप्रीतिराषेउरलाई ॥ मुनिहिमिलतअसिसोहकृपाला ॥ कनकतरुहिजनुभेटतमाला ॥ रामवदनविलोकिमुनिठाढा ॥ मानहुंचित्र
माझलिषिकाढा ॥ दो ॥ तवमुनिहृदयधीरधरिगहिपदवारहिवार ॥ निजआश्रमनवआनिकरिपूजाविविधप्रकार ॥ ३ ॥ चौ ॥ कहमुनि
सुनुविनतीप्रभुमोरी ॥ अस्तुतिकरौकवनविधितोरी ॥ महिमाअमितमोरिमतिथोरी ॥ रविसनमुखषद्योतअंजोरी ॥ स्यामतामरसदामसरीरा ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

जटामुकुट परिधन मुनि चीरा॥ पानि चाप सर कटि तूनीरा॥ नौमि निरंतर श्रीरघुवीरा॥ मोह विपिन घन दहन कृसानू॥ संत सरोरुह कानन
भानू॥ निसिचर करि वरूथ मृगराजू॥ पातु सदा नो भव षग वाजू॥ अरुण नयन राजीव सुवेसं॥ सीता नयन चकोर निसेसं॥ हर हिय मानस राज मरा
लं॥ नौमि राम उर वाहु विशालं॥ संसै सर्प ग्रसन उरगादं॥ समन सुकर्कस तर्क विषादं॥ भव भंजन रंजन सुर जूथं॥ पातु सदा नो कृपा वरूथं॥ निर्गुन स
गुण विषम सम रूपं॥ ज्ञान गिरा गोतीत मनूपं॥ अमल अखिल मनवद्य मपारं॥ नौमि राम भंजन भव भारं॥ भक्त कल्पपादप आरामं॥ गंजन क्रोध लो
भ मद कामं॥ अति नागर भव सागर सेतुं॥ पातु सदा दिनकर कुल केतुं॥ अतुलित भुज प्रताप वल धामं॥ कलि मल विपुल विभंजन नामं॥ धर्म्म वर्म्म नर
त र्म्मद गुण ग्रामं॥ संततं सं तनोतु मम रामं॥ जदपि विरज ब्यापक अविनासिं॥ सव के हृदय निरंतर वासिं॥ तदपि अनुज सीय सहित षरारी॥ वसहु मनसि म
म कानन चारी॥ जो जानै ते हि जानेहुं स्वामी॥ सगुण अगुण उर अंतरजामी॥ जो कोसलपति राजीव नैना॥ करो सो राम हृदय मम ऐना॥ अस अ
भिमान जाइ जनि भोरे॥ मै सेवक रघुपति पति मोरे॥ सुनि मुनि वचन राम मन भाए॥ वहुरि हरषि मुनिवर उर लाए॥ परम प्रसन्न जानि मुनि मोही॥ जो
वर मागहु देउ मै तोही॥ मुनि कह वर मै कवहि न जाचा॥ समुझि न परै झूठ कह सांचा॥ तुमै जो नीक लागै रघुराई॥ सो मोहि देहु दास सुखदाई॥ अविर
लि भक्ति विरति विज्ञाना॥ होहु सकल गुन ग्यान निधाना॥ प्रभु जो दीन्ह सो वर मै पावा॥ अव सो देहु जो कछु मोहि भावा॥ दो॰॥ अनुज जानकी स
हित प्रभु चाप वान धरे राम॥ मम हिय गगन इंदु इव वसहु सदा निःकाम॥ १४॥ चौ॰॥ एवमस्तु कहि रमानिवासा॥ हरषि चले कुंभज रिषि पासा॥ वहु

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

तहँवसगुरुदरसनपाए॥भएमोहिइहिआश्रमआए॥अवप्रभुसंगजाउगुरुपाही॥तुमकहनाथनिहोरानाही॥देषिकृपानिधिमुनिचतुराई
लिएसंगविहसेदोउभाई॥पंथकहतनिजभक्तिअनूपा॥मुनिआश्रमपहुचेसुरभूपा॥तुरितसुतीछनगुरुपहिंगएऊ॥करिदंडवतकहतअसभयऊ॥
नाथकोसलाधीशकुमारा॥आएमिलनजगतआधारा॥रामानुजसमेतवैदेही॥निसिदिननाथजपतहहुजेही॥सुनतअगस्तितुरितउठिधाए॥प्रभु
हिविलोकिनयनजलछाए॥मुनिपदकमलपरसिदोउभाई॥रिषिअतिप्रीतिलिएउरलाई॥सादरकुशलपूछिमुनिग्यानी॥आसनपरवैठारेआनी॥
मुनिकरिवहुप्रकारप्रभुपूजा॥मोहिसमभाग्यवंतनहिदूजा॥जहलगिरहेअपरमुनिवृंदा॥हरषेसवविलोकिसुखकंदा॥दो॥मुनिसमूहवैठेप्रभु
सनमुखसवकिवोर॥सरदइंदुतनचितवतमानहुनिकरचकोर॥५॥चौ॥तवरघुवीरकहामुनिपाही॥तुमसनप्रभुदुरावकछुनाही॥तुमजान
हुंजेहिकारनआयेउ॥तातेंनाथनकहिसमुझाएउ॥तुमसोसिषदेहुप्रभुमोही॥जेहिप्रकारमारौंसुरद्रोही॥मुनिमुसुकानेसुनिप्रभुवानी॥पू
छहुनाथमोहिकाजानी॥तुमरेभजनप्रभावअधारा॥जानौमहिमाकछुकतुह्मारा॥सो॥भ्रकुटीनिरषतनाथतवरतेसदापदकमलतर॥निजउ
रेनिजउदरमहिविवुधविधातासिद्धहर॥चौ॥अतिकरालसवपरजगजाना॥औरकहौंसुनिएभगवाना॥तुमऊमरततविलासतवमाया॥
फलव्रह्मांडअनेकनिकाया॥जीवचराचरजंतुसमाना॥भीतरवसहिनजानहिआना॥तेहिफलभछककठिनकराला॥तवभयडरतसदासोका
ला॥तेतुमसकललोकपतिसांई॥पूछेहुमोहिमनुजकीनाई॥यहवरमागौकृपानिकेता॥वसहुहृदयसियअनुजसमेता॥अविरलभक्तिविर
ह

रषि
८२
आश्रमदेषि
महासुचिसुंद
र।सरितसरो
वरहैंतभ्रधर।
वनचरजलच
रजीवजहांतें
वैरनकरहिंप्री
तिसवहीते॥दो॥
तरुवहुविधि
विहंगमृगवोल
नविविधिप्रका
र।वसहिसि
द्धमुनितपकर
हिमहिमागुल
आगार॥चौ॥
८२

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

तिसतसंगा॥ चरनसरोरुहप्रीतिअभंगा॥ जद्यपिब्रह्मअखंडअनंता॥ अनुभवगम्यभजहिजेहिसंता॥ असतवरूपबषानैजानै॥ फिरि१
फिरिसगुनब्रह्मरतिमानै॥ संततदासनदेहुवडाई॥ तातेमोहिपूछेहुरघुराई॥ हैप्रभुपरममनोहरठाउँ॥ पावनपंचवटीतेहिनाउँ॥ दंडकवनपु
नीतप्रभुकरहू॥ उग्रश्रापमुनिवरकेहरहू॥ वासकरहुतहंरघुकुलराया॥ कीजैसकलमुनिन्हपरदाया॥ चलेराममुनिआयसुपाई॥ तुरतहिपंचवटी
नियराई॥ दो॰॥ गीधराजसोंभेटभइवहुविधिप्रीतिवढाइ॥ गोदावरीनिकटप्रभुरहेपरनगृहछाइ॥१३॥ चौ॰॥ जवतेरामकीन्हतहंवासा॥ सुखीभएमु१
निवीतित्रासा॥ गिरिवननदीतालछविछाए॥ दिनदिनप्रतिअतिहोहिसोहाए॥ षगमृगवृंदअनंदितरहही॥ मधुपमधुरगुंजतछविलहही॥ सोवनवरनि
नसकअहिराजा॥ जहांप्रगटरघुवीरविराजा॥ एकवारप्रभुसुखआसीना॥ लछिमनवचनवोलिछलहीना॥ सुरनरमुनिसचराचरसांई॥ मैंपूछौंनिज
प्रभुकीनाई॥ मोहिसमुझाइकहहुसोइदेवा॥ सवतजिकरोचरनरजसेवा॥ कहहुज्ञानविरागअरुमाया॥ कहहुसोभक्तिकरहुजेहिदाया॥ दो॰॥
ईश्वरजीवभेदप्रभुसकलकहहुसमुझाइ॥ जातेहोइचरनरतिसोकमोहभ्रमजाइ॥ चौ॰॥ थोरहिमहंसवकहोवुझाई॥ सुनहुतातमतमनचितलाई॥
मैंअरुमोरतोरतैमाया॥ एहिवसकीन्हेजीवनिकाया॥ गोगोचरजहंलगिमनजाई॥ सोसवमायाजानेहुभाई॥ तेहिकरभेदसुनहुतुमसोउ॥
विद्याअपरअविद्यादोउ॥ एकदुष्टअतिसैदुखरूपा॥ जावसिजीवपराभवकूपा॥ एकरचैजगगुणवसजाके॥ प्रभुप्रेरितनहिनिजवलताके॥ ज्ञा१
नमानजहंएकोनाही॥ देषैब्रह्मसरिससवमाही॥ कहियताससोपरमविरागी॥ तृनसमसीधितीनिगुनत्यागी॥ दो॰॥ मायाईसनआपुकहुंजानिक

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

आरण्य
६
देषिविक
लभईजु
गलकुमा
रा।

हियसोजीव ॥ वंधमोक्षप्रदसर्वपरमायाप्रेरकसींव ॥१८॥ चौ॥ धर्मतेविरतिजोगतेज्ञाना ॥ ज्ञानतेमोक्षप्रदवेदवषाना ॥ जातेंवेगिद्रवोमैभाई ॥ सोममभक्ति
भगतसुखदाई ॥ सोसुतंत्रअवलंवनआना ॥ तेहिआधीनज्ञानविज्ञाना ॥ भक्तितातअनुपमसुखमूला ॥ मिलहिजोसंतहोहिअनकूला ॥ भक्तकेसाध
नकहोंवषानी ॥ सुगमपंथमोहिपावहिप्रानी ॥ प्रथमहिविप्रचरनअतिप्रीती ॥ निजनिजधर्मनिरतश्रुतिरीती ॥ जेहिकरफलपुनिविषैविरागा ॥ तवम
मचरनउपजअनुरागा ॥ श्रवनादिकनवभक्तिदृढाही ॥ ममलीलारतअतिमनमाही ॥ संतचरणपंकजअतिप्रेमा ॥ मनक्रमवचनभजनदृढने
मा ॥ गुरुपितुमातुवंधकुलदेवा ॥ सवमोकहंजानैदृढसेवा ॥ ममगुनगावतपुलकसरीरा ॥ गदगदगिरानयनवहनीरा ॥ कामआदिमददंभनजाकें
तातनिरंतरवसमनताकें ॥ दो॥ मनक्रमवचनमोरिगतिभजनकरहिनिःकाम ॥ तिन्हकेहृदयकमलमहुंकरौसदाविश्राम ॥१६॥ चौ॥ भक्तियोगसु
निअतिसुखपावा ॥ लछिमणप्रभुचरननसिरनावा ॥ एहिविधिगयेकछुकदिनवीती ॥ कहतविरागज्ञानगुननीती ॥ सूपनखारावनकीवहिनी
दुष्टहृदयदारुणजसिअहिनी ॥ पंचवटीसोगइएकवारा ॥ देषिविकलसकमननहिनरोकी ॥ जिमिरविमनिद्रवरविहिविलोकी ॥ रुचिररूपधरिप्रभुपह राम
जाई ॥ वोलीवचनमधुरमुसकाई ॥ तुमसमपुरुषनमोसमनारी ॥ यहसंजोगविधिरचाविचारी ॥ ममअनुरूपपुरुषजगमाही ॥ देषेउषोजिलोक ६
तिहुंनाही ॥ तातेअवलगिरहिउंकुमारी ॥ मनमानाकछुतुमहीनिहारी ॥ सीतहिचितइकहीप्रभुवाता ॥ अहैकुमारमोरलघुभ्राता ॥ गइलषनरि
पुभगिनीजानी ॥ प्रभुविलोकिवोलेमृदुवानी ॥ सुंदरिसुनुमैंउनकरदासा ॥ पराधीननहितोरसुपासा ॥ प्रभुसमरथकोसलपुरराजा ॥ जोकछुकरहिं

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

वोनहिसकछाजा॥ सेवकसुखचहमानभिखारी॥ विसनीधनसुभगतिविभिचारी॥ लोभिजसुचहैमारगुमानी॥ नभदुहिदुधचहतएकप्रानी॥ पुनि न
फिरिरामनिकटसोआई॥ प्रभुलछिमनपहंवहुरिपठाई॥ लछिमनकहातोहिसोवरई॥ जोतृनतोरिलाजपरिहरई॥ तवरिसिआनिरामपहिगई
रूपभयंकरप्रगटतभई॥ सीतहिसभैदेषिरघुराई॥ कहाअनुजसनसेनवुझाई॥ दो॥ लछिमनअतिलाघोसोनाककानविनुकीन्ह॥ ताकेकर
रावनकहंमनहुंचुनौतीदीन्ह॥२०॥ चौ॥ नाककानविनुभइविकरारा॥ जनुश्रवसैलगेरुकैधारा॥ खरदूषनपहगइविलपाता॥ धिगधिगतवव
लपौरुषभ्राता॥ तेइपूछासवकहिसिवुझाइ॥ जातुधानसुनिसेनवनाइ॥ धावहिनिसिचरविकटवरूथा॥ जनुसपछकज्जलगिरिजूथा॥ नाना
वाहननानाकारा॥ नानाआयुधअसुरअपारा॥ सूपनखाआगेकरिलीन्ही॥ असुभरूपश्रुतिनासाहीनी॥ असगुनअमितहोहिभयकारी॥ ग
नहिनमृतुविवससवझारी॥ गरजहितरजहिगगनउडाही॥ देषिकटकभटअतिहरषाही॥ कोउकहतिअतधरहुदोउभाई॥ धरिमारहुतियले
हुछडाई॥ धूरिपूरिनभमंडलरहा॥ रामवोलाइअनुजसनकहा॥ लेजानकिहिजाहुगिरिकंदर॥ आवानिसिचरकटकभयंकर॥ रहेहुसजगसु
निप्रभुकेवानी॥ चलेसहितसीयसरधनुपानी॥ देषिरामरिपुदलचलिआवा॥ विहसिकठिनकोदंडचढावा॥ छं॥ कोदंडकठिनचढाइसिरजटाजू
टवाधतसोहक्यो॥ मरकतसैलपरलरतदामिनिकोटिसोजुगभुजगज्यो॥ कटिकसिनिषंगविसालभुजगहिचापविसिषसुधारिकै॥ चितवतमनहुमृ
गराजप्रभुगजराजघटानिहारिकै॥ सो॥ आइगएवगमेलधरहुधरहुधावतसुभट॥ जथाविलोकिअकेलवालरविहिघेरतदनुज॥२१॥ चौ॥ प्रभुवि

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

देषेजितेन्हनेदमकेते॥हमभरिजन्मसुनहुसबभाई॥

आरण्य लोकिसरसकहिनआरी॥थकितभएरजनीचरझारी॥सचिवबोलिबोलेखरदूषन॥यहकोउनृपबालकनरभूषन॥नागअसुरसुरमुनिनर
७ जेते॥देषीअसनहिसुंदरताई॥जद्यपिभगिनिकीन्हकुरूपा॥बधलायकनहिपुरुषअनूपा॥देहितुरितनिजनारिदुराई॥जीवतभवनजाहुदोउभाई॥
मोरकहातुमताहिसुनावहु॥तासुबचनसुनिआतुरआवहु॥दूतन्हकहारामसोंजाई॥सुनतरामबोलेमुसुकाई॥हमछत्रीमृगयाबनकरही॥तु
मसेखलमृगषोजतफिरही॥रिपुबलिवंतदेषिनहिडरही॥एकबारकालहुसनलरही॥यद्यपिमनुजदनुजकुलघालक॥मुनिपालकषलघाल
कबालक॥जोनहोइबलघरहफिरिजाहू॥समरविमुखमैहतौनकाहू॥रनचढिकरिअकपटचतुराई॥रिपुपरकृपापरमकदराई॥दूतन्हजाइतुरि
तसबकहेऊ॥सुनिखरदूषणउरअतिदहेउ॥छं॥उरदहेउकहेउकीधरहुधाएविकटभटरजनीचरा॥सरचापतोमरसक्तिसूलकृपानपरि
घपरसुधरा॥प्रभुकीन्हधनुषटंकोरप्रथमकठोरघोरभएमहाभएबधिरब्याकुलजातुधाननज्ञानतेहिअवसररहा॥दो॥सावधानहोइ
धाएजानिसबलआराति॥लागेबरषनरामपहअस्त्रशस्त्रबहुभांति॥दो॥तिन्हकेआयुधतिलसमकरिकाटेरघुवीर॥तानिसरासनश्रवनल राम
गिपुनिछाडेनिजतीर॥रथातोमरछंद॥तबचलेउबानकराल॥फूकरतजनुबहुब्याल॥कोपेउसमरश्रीराम॥चलेविसिषनिसिततनिकाम ७
अवलोकिषरतरतीर॥मुरिचलेनिसिचरवीर॥भयेक्रोधतीनौभाइ॥जेभागिरनतेजाइ॥तेहिबधोमैनिजपानि॥फेरेउमरनमनठानि॥आ
युधअनेकअपार॥सनमुखतेकरहिप्रहार॥रिपुपरमकोपेउजानि॥प्रभुधनुषसरसंधानि॥छाडेविपुलनाराच॥लगेकटनविकटपिसाच

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

उरसीसभुजकरचरन ॥ जहंतहंलगेमहिपरन ॥ चीकरतलागतवान ॥ धरपरतभूधरसमान ॥ भटकटततनशातखंड ॥ नभउडतवहुभुजमुंड ॥ विनुमौ
लिधावतरुंड ॥ महिफूटजनुदधिकुंड ॥ षगकंककाकश्रीकाल ॥ कटकुटहिकठिनकराल ॥ छं ॥ कटकुटहिजंवुकभूतप्रेतपिशाचखपरसंचही ॥ वैता
नि लवीरकपालतालवजाइजोगिनींनाचही ॥ रघुवीरवानप्रचंडषंडहिभटन्हकेउरभुजसिरा ॥ जहंतहंपरहिउठिलरहिधरधरुकरहिभैंकरगिरा ॥ अंत
वरीगहिउडतगीधपिशाचकरगहिधावही ॥ संग्रामपुरवासीमनहुवहुवालगुडीउडावही ॥ मारेपछारेउरविदारेविपुलभटकहरतगिरे ॥ अवलोकि
निजदलविकलभटत्रासिरादिषरदूषणफिरे ॥ सरशक्तितोमरपरसुसूलकृपानएकहिवारही ॥ करिकोपश्रीरघुवीरपरअगनितनिशाचरडा
रही ॥ प्रभुनिमिषिमहरिपुसरनेवारिप्रचारिडारेसायकं ॥ दशदशविसिषउरमांझमारेसकलनिसिचरनायकं ॥ महिपरतभटउठिभिरतमर
तनकरतमायाअतिघनी ॥ सुरडरतचौदहसहसप्रेतविलोकिएकअवधिधनी ॥ सुरमुनिसभैप्रभुदेषिमायानाथअतिकौतुककरयो ॥ दे
षिपरसपररामकरिसंग्रामरिपुदललरिमरयो ॥ दो ॥ रामरामकहितनतजहिपावहिपदनिर्वान ॥ करिउपायरिपुमारेउछनमहकृपानि
धान ॥ दो ॥ हरषितवरषहिसुमनसुरवाजहिगगननिसान ॥ अस्तुतिकरिकरिसवचलेसोभितविविधविमान ॥ चौ ॥ २५ ॥ जवरघुना
थसमररिपुजीते ॥ सुरनरमुनिसवकेभैवीते ॥ तवलछिमनसीतहिलेआए ॥ प्रभुपदपरतहरषिउरलाए ॥ सीताचितवस्याममृदुगाता ॥ परमप्रेमलोचन
नअघाता ॥ पंचवटीवसिश्रीरघुनायक ॥ करतचरितसुरमुनिसुखदायक ॥ धूआंदेषिषरदूषणकेरा ॥ जाइसुपनखारावनप्रेरा ॥ वोलीवचनक्रोध

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

आरण्य ८ करिभारी ॥ देसकोसकैसुरतिविसारी ॥ करसिपानसोवसिदिनराती ॥ सुधिनहिंतवसिरपरआराती ॥ राजनीतिविनुधनविनुधर्मी ॥ हरिहिसमर्पेविनु
सतकर्मी ॥ विद्याविनुविवेकउपजाए ॥ श्रमफलपाढकिएअरुपाए ॥ संगतेजतीकुमंत्रतेराजा ॥ मानतेज्ञानज्ञानतेलाजा ॥ प्रीतिप्रणैविनुमदते
गुनी ॥ नासहिवेगिनीतिअसमुनी ॥ सो ॥ रिपुरुजपावकपापप्रभुअहिगनियनछोटकरि ॥ असकहिविविधविलापकरिलागीरोदनपरन ॥ २६ ॥
इ दो ॥ सभामांझपरिव्याकुलवहुप्रकारकहैरो ॥ तोहिजियतदशकंधरमोरिकिअसगतिहोइ ॥ २७ ॥ चौ ॥ सुनतसभासदउठुअकुलाई ॥ सूपन
खागहिवाहउठाई ॥ कहलंकेसकहसिनिजवाता ॥ केइंतवनासाकाननिपाता ॥ अवधिनृपतिदशरथकेजाए ॥ पुरुषसिंहवनषेलनआए ॥ समुझि
परिमोहितिनकैकरनी ॥ रहितनिसाचरकरिहहिधरनी ॥ जिन्हकरभुजवलपाइदशानन ॥ अभैभएविचरहिमुनिकानन ॥ देषतवालककालसमा
ना ॥ परमधीरधन्वीगुननाना ॥ अतुलितवलप्रतापदोउभ्राता ॥ खलवधरतसुरमुनिसुखदाता ॥ सोभाधामरामअसनामा ॥ तिनकेसंगसुभ
गएकवामा ॥ रूपरासिविधिनारिसवारी ॥ रतिशतकोटितासुवलिहारी ॥ तासुअनुजकाटेश्रुतिनासा ॥ सुनितवभगिनिकीन्हपरिहासा ॥ ख राम ८
रदूषणसुनिलागुगोहारी ॥ छनमहसकलकटकउनमारी ॥ खरदूषणत्रसराकैघाता ॥ सुनिदशसीसजरेउसवगाता ॥ दो ॥ सूपनखहिस
मुझाइकरवलवोलेसिवहुभांति ॥ गएभवनअतिसोचवसनींदपरीनहिराति ॥ २८ ॥ चौ ॥ सुरनरअसुरनागखगमाही ॥ मोरेअनुचरकहंको
उनाही ॥ खरदूषणमोहिसमवलवंता ॥ तिन्हहिकोमारैविनुभगवंता ॥ सुररंजनभंजनमहिभारा ॥ जौभगवंतलीन्हअवतारा ॥ तौमैजाइवयर

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

हठिकरहू ॥ प्रभुसरप्रानतजैंभवतरहूं ॥ होइहिभजननतामसदेहा ॥ मनक्रमवचनमंत्रहढएहा ॥ जौनररूपभूपसुतकोउ ॥ हरिहौं नारिजीति
रणदोउ ॥ चलाअकेलजानचढितहवां ॥ वसमारीचसीधुनतदजहवां ॥ इहारामअसजुक्तिवनाई ॥ सुनहुउमासोकथासोहाई ॥ दो ॥ लछिमनचलेव
नहिजवलेनमूलफलकंद ॥ जनकसुतासनवोलेविहसिकृपासुखकंद ॥ २९ ॥ चौ ॥ सुनहुप्रियाव्रतरुचिरसुसीला ॥ मैकछुकरवललीतनरली
ला ॥ तुमपावकमहकरहुनेवासा ॥ जौलगिकरौनिसाचरनासा ॥ जवहिरामसवकथावषानी ॥ प्रभुपदधरिहियअनलसमानी ॥ निजप्रतिविंवुरा
षितहंसीता ॥ तैसेसीलसरूपविनीता ॥ लछिमनहूंयहमरमनजाना ॥ जोकछुचरितरचेभगवाना ॥ दशमुखगएजहामारीचा ॥ नाएमाथस्वारथर
तनीचा ॥ नवनिनीचकेअतिदुखदाइ ॥ जिमिअंकुशधनुउरगविलाइ ॥ भैदायकखलकेप्रयवानी ॥ जिमिअकाशकेकुसुमभवानी ॥ दो ॥ करिपूजा
मारीचतवसादरपूछीवात ॥ कवनिहेतुमनवेगअतिअकसरआएहुतात ॥ ३० ॥ चौ ॥ दशमुखसकलकथातेहिआगे ॥ कहीसहितअभिमानअभागे ॥
होहुकपटमृगतुमछलकारी ॥ जेहिविधिहरिआनौनृपनारी ॥ तेहिपुनिकहासुहुंदससीसा ॥ तेनररूपचराचरईसा ॥ तासनवैरकवहिनहिकीजे ॥ मा
रेमरियजिआएजीजे ॥ मुनिमखराखनगयउकुमारा ॥ विनुफरसररघुपतिमोहिमारा ॥ शतयोजनआएउछनमाही ॥ तासनवैरकिएभलनांही
भइममकीटभृंगकीनाई ॥ जहंतहंमैदेषौदोउभाई ॥ जौनरतातनदपिअतिसूरा ॥ तिन्हहिविरोधनआइहिपूरा ॥ दो ॥ जेहिताड़कासुवाहुहतिषंडे
उहरकोदंड ॥ खरदूषनत्रिसिरावधेउमनुजकिअसवरिवंड ॥ ३१ ॥ चौ ॥ जाहुभवनकुलकुशलविचारी ॥ सुनतजरादीन्हेसिवहुगारी ॥ गुरुजिमिमूढकर हु

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

आरण्य
९

सिममबोधा॥कहुजगमोहिसमानकोजोधा॥तवमारीचहृदयअनुमाना॥नवहिविरोधेनहिकल्याना॥शस्त्रिमर्मीप्रभुसठधनी॥वैदवंदिकविमानस
गुनी॥उभयभांतिदेषानिजमरना॥तवताकिसिरघुनायकसरना॥उतरदेतमोहिवधवअभागे॥कसनमरोरघुपतिसरलागे॥असजियजानिदशाननसे न
गा॥चलारामपदप्रेमअभंगा॥मनअतिहरषजनावनतेही॥आजुदेषिहौंपरमसनेही॥दो॥निजप्रेमप्रीतमदेषिलोचनसुफलकरिसुखपाइहौं॥सी
यसहितअनुजसमेतकृपानिकेतप्रभुमनलाइहौं॥निर्वानदायकक्रोधजाकरभक्तिअवसहिअसकरी॥निजपानिसरसंधानिसोमोहिवधिहिसुख
सागरहरी॥दो॥ममपाछेधरधावततेधरेंसरासनवान॥पुनिपुनिप्रभुहिविलोकिहौंधन्यनमोसमआन॥२२॥चौ॥तेहिवननिकटदशाननगइऊ॥
तवमारीचकपटमृगभइऊ॥अतिविचित्रकछुवरनिनजाई॥कनकदेहमनिरचितवनाई॥सीतापरमरुचिरमृगदेषा॥अंगअंगसुमनोहरवेषा॥
सुनहुदेवरघुवीरकृपाला॥एहिमृगकेअतिसुंदरछाला॥सत्यसिंधप्रभुवधिकैएही॥आनहुचर्मकहतिवैदेही॥यद्यपिप्रभुजानतसवकारन॥उठेह राम
रषिसुरकाजसवारन॥मृगविलोकिकटिपरिकरवाधा॥करतलचापरुचिरसरसाधा॥प्रभुलछिमनहिकहासमुझाई॥फिरहिविपिननिसिचरव
हुभाई॥सीताकेरिकरहुरषवारी॥वुधिविवेकवलसमयविचारी॥प्रभुहिविलोकिचलामृगभाजी॥धाएरामसरासनसाजी॥निगमनेतिशिवध्यान
नपावा॥मायामृगपाछेसोधावा॥कवहुनिकटपुनिदूरिपराई॥कवहुंप्रगटकवहूंछपिजाई॥प्रगटतदुरतकरतछलभूरी॥एहिविधिगएउप्रभुहिलेर
दूरी॥तवतकिरामकठिनसरमारा॥धरनिपरेउकरिघोरचीकारा॥लछिमनकरप्रथमलैनामा॥पाछेसुमिरेसिमनमहुरामा॥प्रानजातप्रगटेसि

थ

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

निजदेहा॥ सुमरेसिरामससमेतिसनेहा॥ अंतरप्रेमतासुपहिचाना॥ मुनिदुर्लभगतिदीन्हसुजाना॥ दो॥ विपुलसुमनसुरवरषहिगावहिप्रभुगु
णगाथ॥ निजपददीन्हेअसुरकहदीनवंधभगवान॥ ३३॥ चौ॥ मृगवधितुरितफिरेरघुवीरा॥ सोहचापकरकटितुनीरा॥ आरतगिरासुनीजववसी
ता॥ कहलछिमनसोपरमसभीता॥ जाहुवेगिसंकटअतिभ्राता॥ लछिमनविहसिकहासुनिमाता॥ भृकुटिविलाससृष्टिलेहोई॥ सपनेहुसं
कटपरैकीसोई॥ मरमवचनजवसीतैवोला॥ हरिप्रेरितलछिमनमनडोला॥ वनदिसिदेवसउपिसवकाहू॥ चलेजहांरावनससिराहू॥ सू
नवीचदसकंधरदेषा॥ आवानिकटजतीकेवेषा॥ जाकेडरसुरअसुरडराही॥ निसिननीददिनअन्ननषाही॥ सोदशसीसस्वानकीनाई॥ इत
उतचितइचलाभडिहांई॥ इमिकुपंथपगदेतषगेसा॥ रहनतेजवलवुधिलवलेसा॥ नानाविधिकहकथासुनाई॥ राजनीतिभयप्रीतिदेषाई॥
कहसीतासुनुजतीगोसांई॥ वोलेवचनदुष्टकीनाई॥ तवरावननिजरूपदिषावा॥ भईसभैजवनामसुनावा॥ कहसीताधरिधीरजगाढा॥ आ
इगएप्रभुषलरहुठाढा॥ जिमिहरिवधूहिछुद्रससचाहा॥ भएसिकालवसिनिसिचरनाहा॥ सुनतवचनदससीसलर्जना॥ मनमहुचरनवं
दिसुखमाना॥ दो॥ क्रोधवंततवरावनलीन्हेसिरथवैठाइ॥ चलागगनपथआतुरभैरथहांकिनजाइ॥ ३४॥ चौ॥ हाजगदेववीररघुराया॥ केहिअ
पराधविसारेहुदाया॥ आरतहरनसरनसुखदायक॥ हारघुकुलसरोजदिननायक॥ हालछिमनतुम्हारनहिदोसू॥ सोफलपाएउकीन्हेउरोसू॥ वि
विधविलापकरतवैदेही॥ भूरिक्रपाप्रभुदूरिसनेही॥ विपतिमोरिकोप्रभुहिसुनावा॥ पुरोडासचहरासवषावा॥ सीताकैविलापसुनिभारी॥ भए

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

आरण्य चराचरजीवदुखारी॥गीधराजसुनिआरतवानी॥रघुकुलतिलकनारिपहिचानी॥अधमनिसाचरलीन्हे जाई॥जिमिमलेछवसकपिलागाई॥सी
१० तापुत्रिकरसिजनित्रासा॥करिहौंजातुधानकैनासा॥धावाक्रोधवंतषगकैसे॥छूटेपविपर्वतकहजैसे॥रेरेदुष्टठाढकिनहोंही॥निर्भैचलेसिनजा
नासिमोही॥आवतदेषिकृतांतसमाना॥फिरिदसकंधरकरअनुमाना॥कीमैनाककिषगपतिहोई॥ममबलजानसहितपतिसोई॥जानाजरठ
निशाचरएहा॥ममकरतीरथछाडिहिदेहा॥सुनतगीधक्रोधातुरधावा॥कहसुनुरावनमोरसिषावा॥तजिजानकीकुसलग्रहजाहू॥नाहितअ
सहोइहिवहुवाहू॥रामरोषपावकअतिघोरा॥होइहिसलभसकलकुलतोरा॥उतरनदेइदशाननजोधा॥तवहिंगीधधावाकरिक्रोधा॥धरिवक
विरथकीन्हमहिगिरा॥सीतहिराषिगीधिपुनिफिरा॥चोचन्हमारिविदारेसिदेही॥दंडएकभैमुरछातेही॥तवसक्रोधनिसिचरषिसियाना॥का
ढेसिपरमकरालकृपाना॥काटेसिपषपराषगधरनी॥सुमिरिरामकैअद्भुतकरनी॥सीतहिजानचढाइवहोरी॥चलाउताउलत्रासनथोरी॥क
रतिविलापजातिनभसीता॥व्याधविवसजसमृगीसभीता॥गिरिपरवैठेकपिननिहारी॥कहिहरिनामदीन्हपटडारी॥एहिविधिसीतहिलैसोग राम
एउ॥वनअसोकमहराषतभयउ॥दो॥वारवारखलभांतिवहुभैअरुप्रीतिदेषाइ॥तवअसोकपादपतररापेसिजतनकराइ॥२५॥चौ॥ १०
दोहरा॥जेहिविधिकपटकुरंगसंगधाएचलेश्रीराम॥सोछविसीताराषिउररटतिरहहिहरिनाम॥२६॥चौ॥रघुपतिअनुजहिआवतदेषा
वाहिजचिंताकीन्हविशेषा॥जनकसुतापरिहरेउअकेली॥आयोतातवचनममपेली॥निसिचरनिकरफिरहिवनमाही॥ममंनसीताआश्र म

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

मसीता नाही॥ गहिपदकमल अनुजकरजोरी॥ कहेउ नाथमोहि नाहि नषोरी॥ अनुजसमेतगए प्रभुताहां॥ गोदावरितट आश्रमजाहां॥ आ
श्रमदेषिजानकीहीना॥ भएविकलजसप्राकृत दीना॥ हागुनषानीजानकीसीता॥ रूपसील अति नेमपुनीता॥ लछिमन समुझाए सवभांती
त सछुन चलेलतारुपांती॥ हेषगमृगहेमधुकरश्रेनी॥ तुमदेषीसीतामृगनैनी॥ षंजन सुक कपोतमृगमीना॥ मधुकरनिकरकोकिलाप्रवीना
कुंदकलीदाडिमदामीनी॥ कमलसरदससिअहिभामिनी॥ वरुणपासमनोजधनुहंसा॥ गजकेहरिनिजसुनतप्रसंसा॥ श्रीफलकनकक द
लीहरषांही॥ नेकुनसंकुसकुचमनमाही॥ सुनुजानकीतोहिविनुआजू॥ हरषेसकलपाइनिजराजू॥ किमिसहिजातअनषतोहिपाही॥ ए
यावेगिप्रगटसिकिमिनाही॥ एहिविधिषोजतविलपतस्वामी॥ मनहुंमहाविरहीअतिकामी॥ पूरणकामरामसुखरासी॥ मनुजचरितकरअज
अविनासी॥ आगेपरागीधपतिदेषा॥ सुमिरतरामचरननिजरेषा॥ दो॥ करसरोजसिरपरसेउ कृपासिंधुरघुवीर॥ निरषिरामछविधामसुखवि
गतभइसवपीर॥ ३१॥ चौ॥ तवकहवचनगीधधरिधीरा॥ सुनहुंरामभंजनभवभीरा॥ नाथदशाननयहगतिकीन्ही॥ तेइंषलजनकसुताहर
रिलीन्ही॥ लैदछिनदिसिगएउगोसांई॥ विलपतिअतिकुररीकीनांई॥ दरसलागीप्रभुराषेउप्राना॥ चलनचहतअवकृपानिधाना॥ रामकहा
तनराषहुताता॥ मुखमुसुकाइकहीतेइवाता॥ जाकरनाममरतमुखआवा॥ अधममुक्तिहोश्रुतिअसगावा॥ सोममलोचनगोचरआगे॥ रा
षोदेहनाथकेहिषागे॥ जलभरिनैनकहतरघुराई॥ तातकरमनिजतेंगतिपाइ॥ परहितवसजिन्हकेमनमाही॥ तिन्हकहजगदुर्लभकछुनाही

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

आरण्य ॥ तनुतजितातजाहुममधामा॥देउंकहातुमपूरनकामा॥दो॥सीताहरणतातजनि कहेहुतातसनजाइ॥तउमारवमैकुलसहितकहिहि र
॥ दसाननआइ॥३१॥चौ॥गीधदेहतजिधरिहरिरूपा॥भूषणवहुपटपीतअनूपा॥स्यामगातविसालभुजचारी॥अस्तुतिकरतनयनभरि॥
ने रीवा॥छंद॥जयरामरूपअनूपनिर्गुणसगुणगुणप्रेरकसही॥दससीसवाहप्रचंडखंडनचंडसरमंडितमही॥पाथोदगातसरोजमुखराजीव
आयतलोचनं॥नितिनौमिरामकृपालवाहुविसालभवभयमोचनं॥वलमप्रमेयमनादिमजमव्यक्तमेकमगोचरं॥गोविंदगोपरदुंदह
रविज्ञानघनधरनीधरं॥जेराममंत्रजपंतसंतअनंतजनमनरंजनं॥नितिनौमिरामअकामप्रियकामादिखलदलगंजनं॥जेहिश्रुतिनि
रंजनब्रह्मव्यापकविरजअजकहिगावही॥करिज्ञानध्यानविरागजोगअनेकमुनिजेहिपावही॥सोप्रगटकरुणाकंदसोभावृंदअग
जगमोहही॥ममहृदयपंकजभृंगअंगअनंगवहुछविसोहही॥जोअगमसुगमसुभावनिर्मलअसमसमसीतलसदा॥पस्यंतजेहिजो
गीजतनकरिकरतमनवचवससदा॥सोरामरमानिवाससंततदासवसत्रिभुवनधनी॥ममउरवसोसोसमनसंसृतिजासुकीरतिपावनी राम
दो॥अविरलभक्तिमागिवरगीधगएहरिधाम॥तेहिकेक्रियायथोचितनिजकरकीन्हिराम॥३२॥चौ॥कोमलचितअतिदीनदयाला॥ ॥
कारनविनुरघुवीरकृपाला॥गीधअधमखगआमिषभोगी॥गतिदीन्हिजोजाचतजोगी॥सुनहुउमातेलोगअभागी॥हरितजिहोहिविषै
अनुरागी॥पुनिसीतहिखोजतदोउभाई॥चलेविलोकतवनवहुताई॥संकुललताविटपगिरिकानन॥वहुखगमृगतहँगजपंचानन॥आ

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

वतपंथकवंधनिपाता॥तेईसवकहीआयकैबाता॥दुर्वासामोहिदीन्हिआपा॥प्रभुपददेखिमिटासवपापा॥सुनुगंधर्वकहौमैतोही॥मोहिन
सोहाइब्रह्मकुलद्रोही॥दो॥मनक्रमवचनकपटतजिजोगुरुप्रभुसुरसेव॥मोहीसमेतविरंचिशिववसताकेसवदेव॥४०॥चौ॥आपततताउन
पुरुषकहंता॥विप्रपूजसवगावहिसंता॥पूजियविप्रसीलगुनहीना॥सूद्रनगुनगनज्ञानप्रवीना॥कहिनिजधर्मताहिअपनावा॥निजपद
प्रीतिदेखिमनभावा॥रघुपतिचरनकमलसिरनाई॥गएअगगनआपनगतिपाई॥ताहिदेइगतिरामउदारा॥सवरीकेआश्रमपगधारा॥सवरी
देखिरामगृहआए॥मुनिकेवचनसमुझिमनभाए॥सरसिजलोचनवाहुविसाला॥जटामुकुटसिरउरवनमाला॥स्यामगौरसुंदरदोउभाई॥सव
रीपरीचरनलपटाई॥प्रेममगनमुखवचननआवा॥पुनिपुनिपदसरोजसिरनावा॥सादरजललेचरनपखारे॥पुनिसुंदरआसनवैठारे॥
दो॥कंदमूलफलसुरसअतिदियेरामकहआनि॥प्रेमसहितप्रभुखायउवारहिवारवखानि॥४१॥चौ॥पानिजोरिआगेभइठाढी॥प्रभुहिवि
लोकिप्रीतिअतिवाढी॥केहिविधिअस्तुतिकरौतुम्हारी॥अधमजातिमैजडमतिभारी॥अधमतेअधमअधमअतिनारी॥तिन्हमहमैअ
तिमंदअघारी॥कहरघुपतिसुनुभामिनिवाता॥मानौएकभगतिकैनाता॥जातिपांतिकुलधर्मवडाई॥धनवलपरिजनगुनचतुराई॥भक्तिही
ननरसोहैकैसा॥विनुजलवारिददेखियजैसा॥नवधाभक्तिकहौंतोहिपांही॥सावधानधरिसुनुमनमाहीं॥प्रथमभक्तिसंतनकरसंगा॥दूसरि

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

आ० १२ भक्ति मम कथा प्रसंगा ॥ दो० ॥ गुरु पद पंकज सेवा तीसरि भक्ति अमान ॥ चौथी भक्ति मम गुन गन करै कपट तजि गान ॥४२॥ चौ० ॥ मंत्र जाप
मम दृढ विस्वासा ॥ पंचम भजन सो देव प्रगासा ॥ छठवा सील विरति वहु कर्मा ॥ निरत निरंतर संजम धर्मा ॥ सातो सम मोहि मै जग देषै ॥ मोहि
ते संत अधिक करि लेषै ॥ अठवा यथालाभ संतोषा ॥ सपनेहु नहि देषै पर दोषा ॥ नवम सरल सव सन छलहीना ॥ मम भरोस हिय हरष न दी
ना ॥ नव मे जिन कै एको होई ॥ नारि पुरुष सचराचर कोई ॥ अतिसै भामिनि तै प्रिय मोरे ॥ सकल प्रकार भक्ति दृढ तोरे ॥ जोगी वृंद दुर्लभ गति जोई
तो कह आजु सुफल भा सोई ॥ मम दरसन फल परम अनूपा ॥ जीव पाव निज सहज सरूपा ॥ जनकसुता कै सुधि कछु भामिनि ॥ जानत है तो क
हु करिवरगामिनि ॥ पंपासरहि जाहु रघुराई ॥ तहं होइहि सुग्रीव मिताई ॥ सो सव कहिहि देव रघुवीरा ॥ जानतहू पूछहु मतिधीरा ॥ वार वार
प्रभु पद सिरु नाई ॥ प्रेम सहित सव कथा सुनाई ॥ छं० ॥ कहि कथा सकल विलोकि हरि मुख हृदय पद पंकज धर्यो ॥ तजि जोग पावक देह
हरि पद लीन भै जह नहि फिर्यो ॥ नर विविध कर्म अधर्म वहु मत सोक प्रद सव त्यागही ॥ विस्वास करि कह दास तुलसी राम पद अनु राम १२
रागही ॥ दो० ॥ जाति हीन अघ जन्म महि मुक्ति कीन्ह अस नारि ॥ महा मंद मन सुख चहसि ऐसे प्रभुहि विसारि ॥४३॥ चौ० ॥ चले राम त्या
गा वन सोऊ ॥ अतुलित वल नर केहरि दोऊ ॥ विरही इव प्रभु करत विषादू ॥ कहत कथा अनेक संवादू ॥ लछिमन देषि विपिन कै सोभा ॥ देषत केहि
कर मन नहि छोभा ॥ देषत केहि कर मन नहि छोभा ॥ नारि सहित सव षग मृग वृंदा ॥ मानहु मोरि करत हहि निंदा ॥ हमहि देषि मृग निकर परा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

ही॥ म्रगीकहहितुमकहभयनाही॥ तुम्हआनंदकरहुम्रगजाए॥ कंचनम्रगएषोजनआए॥ संगलाइकरकरिनिलेही॥ मानहुमोहिसिषावनु
देही॥ सास्त्र सुचिंतितपुनिपुनिदेषिय॥ भूपसुसेवितवसीनहिलेषिय॥ राषियनारिजदपिउरमाही॥ जुवतीसास्त्रनृपतिवसनाही॥ देषहुता
तवसंतसोहावा॥ प्रयाहीनमोहिभयउपजावा॥ दो॥ विरहविकलवलहीनमोहिजानेसिनिपटअकेल॥ सहितविपिनमधुकरषगन्हि
मदनकीन्हवगमेल॥ ४४॥ दो॥ दो॥ देषिगएउभ्रातासहिततासुदूतसुनिवात॥ डेरादीन्हेउमनहुतवकटकहटकिमनजात॥ ४५॥ चौ॥ विट
पविसालल्लताअरुझानी॥ विविधिवितानदीन्हजनुतानी॥ कदलितालवरधुजापताका॥ देषिमोहधीरजमनजाका॥ विविधभांतिफूलेतरुना
ना॥ जनुवानैतवनेवहुवाना॥ कहुंकहुंसुंदरविटपसोहाए॥ जनुभटविलगिविलगिहोइछाए॥ कुंजतपिकमानहुगजमाते॥ ढेंकमहो
षऊंटवेसराते॥ मोरचकोरकिरवरवाजी॥ पारावतमरालसववाजी॥ तीतरलवापदचरजूथा॥ वरनिनजाइमनोजवरूथा॥ रथगिरिसिला
दुंदुभीझरना॥ चातकवंदीगुनगनवरना॥ मधुकरमुषरभेरिसहनाई॥ त्रविधिवयारिवसिठिआई॥ चतुरंगीसेनासवलीन्हे॥ विचरतसव
हिचुनौतिदीन्हे॥ लछिमनदेषतकामअनीका॥ रहहिधीरतिन्हकेजगलीका॥ एहिकेएकपरमवलनारी॥ तेहितेंवरैसुभटसोभारी॥ 3
दो॥ ताततीनिअतिप्रवलषलकामक्रोधअरुलोभ॥ मुनिविज्ञानधाममनकरहिनिमिषिमहुछोभ॥ ४६॥ दो॥ लोभकेइछादंभवलकाम
केकेवलनारि॥ क्रोधकेपुरुषवचनवलमुनिवरहृदयविचारि॥ ४७॥ चौ॥ गुणातीतसचराचरस्वामी॥ रामउमासवअंतरजामी॥ कामिन्ह

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

केदीन्हतादिषाई॥धीरन्हकेमनविरतिहटाई॥क्रोधमनोजलोभमदमाया॥छूटहिसकलरामकीदाया॥सोनरइंद्रजालनहिभूला॥जापर
होइसोनटअनुकूला॥उमाकहौमैअनुभवअपना॥हरिकेभजनसत्यजगसपना॥पुनिप्रभुगएसरोवरतीरा॥पंपानामसुभगगंभीरा॥दो
पुरइनिसघनवोटजलवेगिनपाइयमर्म॥मायाछन्नहिनदेषिअहिजैसेनिर्गुनब्रह्म॥४८॥चौ॥विगसेसरसिजनानारंगा॥मधुरमुखरगुं
जहिवहुभृंगा॥बोलतजलकुकुटकलहंसा॥प्रभुविलोकिजनुकरतप्रसंसा॥चक्रवाकवकषगसमुदाई॥देषतवनैवरनिनहिजाई॥सुंदरषग
गनगिरासोहाई॥जातपथिकजनुलेतवेलाई॥तालसमीपमुनीन्हगृहछाए॥चहुदिसकाननविटपसोहाए॥चंपकवकुलकदंवतमाला॥
पाटलपनसपलासरसाला॥नवपल्लवकुसुमिततरुनाना॥चंचरीकपटरीकरगाना॥सीतलमंदसुगंधसुभाऊ॥संततवहैमनोहरबाऊ॥कुहू
कुहूकलकोकिलधुनिकरही॥सुनिरवसरसध्याननमुनिटरही॥दो॥फलभरनम्रविटपसवरहेभूमिनियराइ॥परउपकारीपुरुषजिमिनव
हिसुसंपतिपाइ॥४९॥चौ॥देषिरामअतिरुचिरतलावा॥मज्जनकीन्हपरमसुखपावा॥देषीसुंदरतरुवरछाया॥वैठेअनुजसहितरघुराया
तहपुनिसकलदेवमुनिआए॥अस्तुतिकरिनिजधामसिधाए॥वैठेपरमप्रसन्नकृपाला॥कहतअनुजसनकथारसाला॥विरहवंतभग
वंतहिदेषी॥नारदमनभाछोभविशेषी॥मोरश्रापकरिअंगीकारा॥सहतरामनानादुखभारा॥ऐसेप्रभुहिविलोकौजाई॥पुनिनवनिहि
असअौसरआई॥एहिविचारिनारदकरवीना॥गएउजहांप्रभुसुखआसीना॥गावतरामचरितमृदुवानी॥प्रेमसहितवहुभांतिवषा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

नीकरत दंडवत लिए उठाई। राषे वहुत वार उर लाई॥ स्वागत पूछि निकट वैठारे॥ लछिमन सादर चरन पषारे॥ दो॥ नाना विधि विनती करि प्रभु प्र
सन्न जिय जानि॥ नारद वोले वचन तव जोरि सरोरुह पानि॥ ५०॥ चौ॥ सुनहु परम उदार रघुनायक॥ सुंदर अगम सुगम वरदायक॥ देहु एक वर
मागौ स्वामी॥ यद्यपि जानहु अंतरजामी॥ जानत हौ मुनि मोर सुभाउ॥ जन सन कवहि न करौ दुराउ॥ कवनि वस्तु अति प्रिय मोहि लागी॥ जो मुनि
वर न सकहु तुम मांगी॥ जन ते कछु अदेय नहि मोरे॥ अस विस्वास तजहु जनि भोरे॥ तव नारद वोले हरषाई॥ अस वर मागौ करौ ढिठाई॥ ज
द्यपि प्रभु के नाम अनेका॥ श्रुति कह अधिक एक ते एका॥ राम सकल नामन ते अधिका॥ होउ नाथ अघ षग गन वधिका॥ दो॥ राका रजनि भक्ति त
व राम नाम सोइ सोम॥ अपर नाम उडगन विमल वसहु भक्त उर व्योम॥ ५॥ दो॥ एवमस्तु मुनि सन कहेउ कृपासिंधु रघुनाथ॥ तव नारद मन हरष
अति प्रभु पद नायो माथ॥ ५२॥ चौ॥ अति प्रसन्न रघुनाथहि जानी॥ तव नारद वोले मृदु वानी॥ राम जवहि प्रेरि निज माया॥ मोहेहु मोहि सुनहु र
घुराया॥ तव विवाह मै चाहौ कीन्हा॥ प्रभु केहि कारन करै न दीन्हा॥ सुनु मुनि तोहि कहौ सहरोसा॥ भजहि मोहि तजि सकल भरोसा॥ करौ सदा तिन्ह कै र
षवारी॥ जिमि वालक राषै महतारी॥ गह ससि सुवछ अनल अहि धाई॥ तहं राषै जननी अरु गाई॥ प्रौढ भए तेहि सिसु पर माता॥ प्रीति करै नहि पाछि
ल वाता॥ मोरे प्रौढ तनै सम ज्ञानी॥ वालक सुत सम दास अमानी॥ जानहि मम वल निज वल नाही॥ दुहुं कहं काम क्रोध रिपु आही॥ एहि विचार
पंडित मोहि भजही॥ पाएहुं ज्ञान भक्ति नहि तजही॥ दो॥ काम क्रोध लोभादि मद प्रवल मोह कै धारि॥ तिन्ह महं अति दारुण दुषद मायारूपी ना

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

आरण्य०
१४

रि॥५३॥चौ॥सुनुमुनिकहपुरानश्रुतिसंता॥मोहविपिनिकहंनारिवसंता॥जपतपनेमजलाश्रमझारी॥होइग्रीषमसोषैसवनारी॥का
मक्रोधमदमत्सरभेका॥इन्हहिहरषप्रदवरषाएका॥दूर्वासनाकुमुदसमुदाई॥तिन्हकैसदासरदसुखदाई॥धर्मसकलसरसिरुहवृंदा
होहिमातिन्हहिदेतदुखमंदा॥पुनिममताजवासवहुताई॥पलुहैनारिसिसिररितुपाई॥पापउलूकनिकरसुखकारी॥नारिनिविडरजनी
अधियारी॥वुधिवलसीलसत्यसवमीना॥वनसीसमतयकहहिप्रवीना॥दो॥औगुनमूलसूलप्रदप्रमदासवदुषषानि॥तातेकीन्ह
नेवारनमुनिमैयहजियजानि॥५४॥चौ॥सुनिरघुपतिकेवचनसोहाए॥मुनितनपुलकनयनभरिआए॥कहहुकवनप्रभुकेयहरी
ती॥सेवकपरममताअतिप्रीती॥जेनभजहिअसप्रभुसवत्यागी॥ज्ञानरंकनरपरमअभागी॥पुनिसादरवोलेमुनिनारद॥सुनहुरा
मविज्ञानविसारद॥संतनकेलछनरघुवीरा॥कहहुनाथभंजनभवभीरा॥सुनुमुनिसंतनकेगुनकहऊं॥जातेमैउनकेवसरहऊं
षटविकारतजिअनघअकामा॥अचलअकिंचनसुचिसुखधामा॥अमितवोधअनीहमितभोगी॥सत्यसारकविकोविदजोगी राम
समाधानमानदमदहीना॥धीरभक्तिपथपरमप्रवीना॥दो॥गुणागारसंसारदुखरहतविगतसंदेह॥तजिममचरनसरोजप्रियतिन्हके १४
देहनगेह॥५५॥चौ॥निजगुणसुनतश्रवनसकुचाहीं॥परगुणसुनतअधिकहरषाहीं॥समसीतलनहित्यागहिनीती॥सरलसुभा
वसवनसनप्रीती॥जपतपव्रतदमसंजमनेमा॥गुरुगोविंददविप्रपदप्रेमा॥श्रद्धाछमामइत्रीदाया॥प्रमुदितममपदप्रीतिअमाया॥विरति

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

आरण्य
१५

विवेकविनैविज्ञाना॥ बोधयथारथवेदपुराना॥ दंभमाननमदकरहिनकाउ॥ भूलिनदेहिकुमारगपाउ॥ गावहिसुनहिसदाममलीला॥ हेतु
रहिततपरहितनिरतसीला॥ सुनुमुनिसाधुनकेगुणजेते॥ कहिनसकहिसारदश्रुतितेते॥ छं॥ कहिसकनसारदसेषनारदसुनतपदपंकजग
गहे॥ असदीनबंधकृपालअपनेभक्तगुननिजमुखककहे॥ सिरनाइवारहिवारचरनन्हिब्रह्मपुरनारदगए॥ तेधन्यतुलसीदासआसविहायजे
हिहरिरंगरए॥ दो॥ रावनअरिजसुपावनगावहिसुनहिजेलोग॥ राममक्तिदृढपावहिविनुविरागजपजोग॥ दो॥ दीपसिषासमजुवतीरसमनजनि
होसिपतंग॥ भजहिरामतजिकाममदकरहिसदासतसंग॥ ५७॥ इतिश्रीरामचरित्रेमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेविमलविज्ञानसंपादिने
नामतृतीयसोपानः आरण्यकाण्डसमाप्तः॥ ॥ संवत १८३५ भाद्रपद कृस्न ११ लिखितारामरत्नद्विजेनहंसदासवैस्नवपठनार्थे॥ ॥शुभंभूयात्॥ ॥

श्रीरामजीसहाय॥ ॥राम॥ ॥राम॥ ॥राम॥ राम॥ राम॥ राम॥ राम॥ राम॥ राम॥ राम॥ राम॥ राम॥ राम॥ राम॥ राम॥ राम॥ राम॥
श्रीराम॥ श्रीराम॥ श्रीराम॥ राम॥ राम॥ राम॥ राम॥ राम॥ राम॥ राम॥ राम॥ राम॥ राम॥ राम॥ राम॥ राम॥ राम॥ राम॥ राम॥ राम॥ राम राम
राम॥ १५
राम॥ राम॥
रामायनमः॥ रामायनमः॥ रामायनमः॥ रामायनमः॥ रामायनमः॥ रामायनमः॥ रामायनमः॥ रामायनमः॥ रामायनमः॥ रामायनमः

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

तृतीय सोपान

अरण्य का 103

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative